ज़माना

एक अनोखा जादूगर है यह ज़माना ।
इन्सान बस उसके हाथ काहै खिलौना ।
कभी वह खुशी के पहाड पर हमें ले जायेगा
कभी तो गम के दरिया में हमें गिरायेगा

धरती को दूसरी जन्नत बनायेगा ।
आसमान से सितारों को नीचे लायेगा
आचानक ही सब कुछ मिटायेगा
वह जो चाहता है वही करता रहेगा

दिलों को मीठे खवाबों से भर देगा
राहों में तो हीरा मोती बिखर देगा
एक ही पल में हसायेगा और रुलायेगा
वह जो चाहता है वही करता रहेगा

राजा को रंक और रंक को राजा बना देगा
सारे संसार को अपने जाल में फसा देगा
राज़ वह अपना किसी को कभी न बता देगा
वह जो चाहता है वही करता रहेगा

लेखक : उज्ज्वल शास्ता

उस्ताद

बस- स्टैण्ड पर काफी बडी भीड लगी थी । कालेज छूट जाते से बहुत से छात्र क्रुष्ठे हुए थे । अब आनेवाली किसी भी बस में घुस जाना. न आम आदमी के बस में है, न खतरे बाहर।

लोगों के चढ़ले और उतरने से पहले ही गाडी चलाने, बसवालों की तथा बस के आने और रूकने से पहले उसमें घुसने, विध्याि

कत करनी पड़ेगी । पर एक कालेज प्रोफेसर यह सब कैसे करें ।

दस मिनट पैदल चलें तो लाइन बस्सें मिलेंगी । उनमें किसी एक पर चद सके तो वक्त पर शहर पहूंचेगे । यह सोचते हुए वे भारी सूट केइस और बैग लेकर आगे बदने लगे ।

मुख्य सडक पर पहूचे तो और भी मायूसी छा गयी । क्यों कि वहा तो छात्र बडी तादाद में मौजूद थे । तीन-चार बस्सें आयीं, पर विध्यार्थियों को देकते ही राकेट की तरह निकल गयीं । अब इन छात्रों के जाने के बाद ही इस स्टाप पर बस्सें रूकेंगी । लेकिन ये जायेंगे कैसे आखिर इन्हें भी तो अपने घर पहूचेना

कुछ बस्सें तों स्टाप से ज़रा हटकर यात्रियों को नीचे धकेलकर आगे निकली ।

वे बेचेन होकर इधर-उधर ताकने लगे । विध्यार्थी भी भीगी बिल्लियों की भति खडे धे । वे धीरे-धीरे प्रोफेसर के नजदीक आने कहा-सर आप जरा हाथ बढ़ाकर बस को रोकिए ताकि हम भी तो चद सके ।

तुम लोगों की वजह से ही ये जो सारी बस्सें नान स्टाप होकर जा रही हैं -उनका मज़ाक सुनकर लडके सब हस पडे ।

आप उन दो शब्सों के पास जा के

हाथ से इशारा करेंगे तो बस ज़रूर रूकेगी । दूसरे का सुझाव ।

आपके शढ़ने के बाद ही हम चढेंगे, सर तीसरा बोल उठा ।

अगर एक बार गाडी रूक जाती तो देख लीजिए कि क्या होता हे । चौथे की आवाज में गुस्सा और घमण्ड । ठीक हे । मगर तुम लोगों की ये जो किताबें साहब के शब्दों में सन्देह ।

मान गये सर । आप तो वाकई हमारे उस्ताद निकले । कहते हुए कुछ छात्र जल्दी से कपडों के पीछे और नीचे किताबें छुपाने लगे । और कुछ सबसे नादान दो लडकों के हाथों पर सारा बोझ रखकर आज़ाद हुए ।

सर, सर वह देखिए । वह जो आ रही है न । बडी तेज़ रक्तार है उसकी । रोकिए उस । पन्दृह मिनट में शहर पकडरगी । चालाक ने शब्दों का सम्मीहनास्त्र चलाया ।

हा, हा । कोशिश करके देकते है - कहते हुए प्रोफेसर बहुत देर से बस के इंतजार में खडे दो जवानों के पास दौडकर हाथ बढाकर दिखाने लगे । शहर के मुसाफिर मालूम होते ही बसशिकार को देशे साप के समान अचानक रूक गयी ।

फिर क्या था । लडके साहब को ध केलते हुए बस में घुसने लगे । अब उनकी फिक्र कोई क्यों करे । वैसे तो उसके लिए वक्त ही कहा था । क्लीनर तो घण्टी बजाने को बेचैन हो रहा था । चेक्किंग इन्स्पेक्टर की हैरानी, कण्डक्टर की परेशानी और ड्राइवर की जल्दबाज़ी सब मिलकर हलचल सी होने लगी ।

किसी तरह दो जवानों के पीछे त्रोफेसर भी चढ गये । साफ-सुथरे कपडे और खूबसूरती से सवारे गये बाल सबकुछ अस्त-व्यस्त हो चुके थे । पर क्या किया जाया । कम से कम बस में घुस तो सका- वही बडी बात हे । लेकिन बैठने की जगह तीनों को न मिली।

बस को रोकने की तरकीब बताये चारों लडके बिना किसी संकोच के, सीट पर एक दूजे की गोद में आराम से बैडे थे । ज़्यादातर लडके एक दूसरे की गोद में ही थे । अगर इनमे से कोई उठकर सीट दें तो उसे गोद में बिठाकर सफर करना भी मंजूर है- एक अजीब-सी लालच भरी लालसा उनके मन में पंख पसारने लगी । पर कोई उठे और उनसे कहे, तब न । उन लडकों की हसी और खुशी देख वे तडप उठे ।

मुझे कुर्सियों में कोई दिलचस्पी नहीं । दर्जे में अक्सर बोले जाते वाले अपने ही आगर्श वाक्र अव उन्हें सताने लगे । लेकिन वहत जल्दी शहर पहुचैगे- यह रव्याल- ड्इवर के हाथों में पडकर बस को संभालनेवाली स्टीयरिंग की तरह। उनके दिल को तसल्ली दे रहा था । एक हल्की मुस्कान उनके होठों पर खिल रही थी ।